आरती सरस्वती जी की

ओडम् जय वीणे वाली, मैया जय वीणे वाली ।
ऋद्धि सिद्धि की रहती, हाथ तेरे ताली ।।
ऋषि मुनियों की बुद्धि को शुद्ध तू ही करती ।
स्वर्ण की भांति शुद्ध तू ही करती ।।
ज्ञान पिता को देती, गगन शब्द से तू ।
विश्व को उत्पन्न करती, आदिशक्ति से तू ।।
हंस वाहिनी दीजै, भिक्षा दर्शन की ।
मेरे मन में केवल, इच्छा दर्शन की ।।
ज्योति जगाकर नित्य, यह आरती जो गावे ।
भव सागर के दुःख में, गोता न कभी खावे ।।

विवरण

माता लक्ष्मी की ताली जिनके हाथ रहती है, ऐसी वीणे वाली सरस्वती माता की जय हो । आप ऋषि-मुनियों की मति को सोने की तरह स्वच्छ एवं शुद्ध बनाती हो तथा गगन शब्द से ही आप ही भगवान को ज्ञान प्रदान करती हो । अपनी शक्ति से ही आप पूरे ब्रह्माण्ड की उत्पति करती हो ।

हे हंस की सवारी करने वाली माता ! आप हमें अपने दर्शन की भीख दे दीजिए, क्यों कि हमारे मन में आपके दर्शन की ही लालसा है । जो भी अपने ज्ञान रूपी दीपक को जलाकर आपकी आरती करता है, वह जन्म - मरण के इस नश्वर संसार में कभी डूबता उतराता नहीं है ।

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.